कुमार जीवन - 1

अव्यक्त बापदादा :-

➳➳ यह बगीचा है। बापदादा चैतन्य बगीचे में आते हैं। तो कुछ वाणी से खुश्बू लेते हैं, कुछ नयनों से, कुछ मस्तक के मणि से। हरेक के मस्तक के मणि की चमक बापदादा देखते हैं। ऐसे ही अगर आप सभी भी मस्तक के मणि को ही दखते रहो तो फिर यह दृष्टि और वृत्ति शुद्ध सतोप्रधान बन जायेगी।

➳➳ दृष्टि जो चंचल होती है उसका मूल कारण यह है। मस्तक के मणि को न देख, शरीरिक रूप को देखते हो। रूप को न देखो लेकिन मस्तक के मणि को देखो। जब रूप को देखते हो तो ऐसे ही समझो कि सांप को देख रहे हैं। सांप के मस्तक में मणि होती है ना। तो मणि को देखना है, न कि सांप को। अगर शरीर-भान में देखते हो तो मानों सांप को देखते हो। सांप को देखा और सांप ने काटा! सांप तो अपना कार्य करेगा। सांप में विष भी होता है।

➳➳ कोई-कोई विशेष सांप होते हैं जिनमें मणि होती है। आप गोपों को सांप को कैसे माना है क्या करेंगे? आप सांप को देखते हुए भी सांप को न देखो। मणि को ही देखो। मणि को देखने से सांप का तो विष होता है वह हल्का हो जायेगा। अगर शरीर रूपी सांप को देखा तो फिर उनके बन जायेंगे, उन समान बन जायेंगे। लेकिन मणि को दखेंगे तो बापदादा के माला के मणि बन जायेंगे। या तो बनना है सांप के समान या तो बनना है माला की मणि। अगर मणि बनना है तो देखो भी मणि को।

➳➳ फिर जो यह कम्पलेन है वह बदलकर कम्पलीट हो जायेंगे, सिर्फ बुद्धि की परख से। कहाँ कम्पलेन, कहाँ कम्पलीट रात-दिन का फर्क है, लेकिन सिन्धी भाषा में लिखेंगे तो सिर्फ दो बिन्दियों का फर्क है। यहाँ भी ऐसे हैं। दो बिन्दी - एक स्वयं की, एक बापदादा की। यह दो बिन्दी ही याद रहें तो कम्पलेन की बजाय कम्पलीट हो जायें।

➳➳ इसलिए आज से यह प्रतिज्ञा अपने आप से करो। बापदादा के सामने तो बहुत प्रतिज्ञाएं की है, लेकिन आज अपने आपसे प्रतिज्ञा करो कि - "अब से लेकर सिवाए मणि के और कुछ नहीं देखेंगे और खुद ही माला के मणि बनकर के सारी सृष्टि को चमकायेंगे।" जब खुद मणि बनेंगे तब चमकेंगे। अगर मणि नहीं बनेंगे तो चमक नहीं सकेंगे। जग प्रतिज्ञा करेंगे तब ही प्रत्यक्षता होगी। अपने आपसे पूर्ण रूप से प्रतिज्ञा नहीं कर पाते हो, इसलिए प्रत्यक्षता भी पूर्ण रूप से नहीं हो पाती है। प्रतयक्षता कम निकलने का कारण अपने आपसे प्रतिज्ञा की कमी है। अभी-अभी बोलते हो, फिर अभी-अभी भूलते हो। लेकिन अब प्रतिज्ञा के साथ-साथ यह भी निश्चय करो कि प्रत्यक्षता भी लायेंगे।

➳➳ पाण्डव सेना है 'ज्ञानी तू आत्मा' और शक्ति सेना है 'स्नेही तू आत्मा'। जो स्नेही हैं वह योगी हैं। अभी तो एक-एक पाण्डव के मस्तक में उमंग-उत्साह झलक रहा है। यह उमंग और उत्साह एकरस सदा रहे। मेहनत जो ली है उसका फल दिखाना हे। अगर मेहनत ली हुई यहाँ चुक्तू नहीं करेंगे तो फिर सतयुग में वह मेहनत का फल देना पड़ेगा। इसलिए जो मेहनत ली है उसे भरकर देना।

➢➢ देह क्या है ?

➳_➳ भूत है

➳ _ ➳ सांप है

➳ _ ➳ मिटटी है

→ पत्थर, मिटटी और देह सब एक समान है

➳ _ ➳ पंच तत्वों का एक संगठन मात्र

→ पंच तत्वों में ही इसे विलीन हो जाना है

➳ _ ➳ नश्वर है

➳ _ ➳ परिवर्तनशील है

→ जो आज है... वह कल नहीं रहेगा

- अपने बचपन से लेकर आज तक के फोटो देखो... तो एहसास होगा यह कितना बदल रहा है

➳ _ ➳ शव है

→ बार बार शमशान घाट में अपने देह को जलते हए देखिये

- देह का सौन्दर्य, देह की प्रतिष्ठा, देह की अकड़ सब कुछ नष्ट हो रहा है

- शमशानी वैराग स्वयं में लेकर आइये

➳ _ ➳ मॉस का पुतला है

➳ _ ➳ भ्रम है

➢➢ देह से वैराग लाने के लिए विशेष पुरुषार्थ

➳ _ ➳ जो दृश्य (शरीर) है उसे नहीं देखना है

➳ _ ➳ जो अदृश्य (आत्मा) है उसे देखना है

→ Practise Makes A Man Perfect

- अभ्यास से सब कुछ सरल हो जाता है

➳ _ ➳ जो कुछ इन आँखों से दिख रहा है... सब कुछ नष्ट हो रहा है...

→ साक्षी होकर देखो

➳ _ ➳ बूढ़े व्यक्ति को देखो / जरा

→ शरीर की लाचार निर्बल अवस्था को देखो

➳ _ ➳ हॉस्पिटल में तड़पते हुए बीमार शरीरों को देखो / व्याधि